

## 14. यह अंत नहीं

ओम प्रकाश वाल्मीकि

### लेखक परिचय

हिन्दी साहित्य की दलित साहित्य धारा के एक सशक्त रचनाकार के रूप में ओमप्रकाश वाल्मीकि का नाम सर्व परिचित है। हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य की कलात्मकता और उसके सौंदर्यशास्त्र, शैली, भाषा और कलेवर को लेकर काफी चर्चा चल रही है। हिन्दी साहित्य के धुरंधरों में इसकी मान्यता को लेकर अभी भी काफी वाद-विवाद है। यह वे लोग हैं, जो हिन्दी साहित्य को पुरोहितवादी परंपराओं और कुल श्रेष्ठता की झूठी वायवीय कल्पनाओं से विलग करके नहीं देखते। हिन्दी के प्रगतिशील साहित्य, जनवादी साहित्य ने भी दलित समुदाय के जीवन की भीषण वास्तविकताओं, दमन, शोषण और उत्पीड़न को उसके यथार्थ रूप में चित्रित नहीं किया। इसी कमी को दलित रचनाकारों द्वारा रचित रचनाएं पूर्ण कर रही हैं।

हिन्दी साहित्य की केवल सहानुभूति और कष्टना के सहारे दलित जीवन पर लिखी रचनाओं से दलित रचनाकार की रचना सभी मायने में भिन्न है; क्योंकि यह आत्मानुभूति की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। न केवल इसकी केन्द्रीय समस्याएं अलग हैं बल्कि दार्शनिक आधार व मूल्यगत चेतना का स्वर, रचना की प्रस्तुति के स्तर पर एकदम अलग है। जैसे एक ही कलेवर में दो भिन्न जीव। जातीयता की तपीश से दग्ध मन में आकार लेते हुए विद्रोह का यह शब्दबद्ध प्रखर स्वर है। साहित्य की संकीर्ण मध्यवर्गीय मानसिकता और तथा आत्मतुष्ट यथास्थितिवादी व्यवस्था पर दलित रचनाएं जबरदस्त प्रहार करती हैं। अज्ञानाब्दियों से मूक अछूतों की असहाय पीड़ा की यह रचनात्मक अभिव्यक्ति दलित जीवन को भिन्न आयामों को खोल रही है। हिन्दी से पहले यह विद्रोही स्वर सर्वप्रथम सामाजिक अभिव्यक्ति आंदोलन का रूप लेकर मराठी साहित्य से उभरा था। महाराष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और बहुजन आंदोलन के प्रेरणा स्रोत महात्मा ज्योतिबा फुले और दलित समाज के क्रांतिकारी अभियान के प्रणेता डॉ० बाबासाहेब के विचारों से ऊर्जा लेकर दलित साहित्य मराठी साहित्य में प्रथम प्रस्फुटित हुआ। दलित साहित्य धारा की अवधारणा को रचनात्मक अभिव्यक्ति के मातृ रचनाकार के रूप में ओमप्रकाश वाल्मीकि का नाम अब अपरिचित नहीं है। 'काल' नामक उपन्यास 'जूठन' में दलित जीवन की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वास्तविकताओं को निजी अनुभवों का अत्यंत सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। इस रचना के द्वारा दलित समाज की गहरी दुःखिता की गहरी, बुझाई और यत्न की दलित दहलाने वाली शक्ति का अर्थ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों ने दलित जीवन की त्रासदी को उजागर किया है।

‘यह अन्त नहीं’ कहानी डॉ० कुसुम वियोगी द्वारा संपादित कहानी संग्रह ‘समकालीन दलित कहानियाँ’ में संग्रहित है। इस कहानी के द्वारा ओमप्रकाश वाल्मीकि ने हिंदू समाज संरचना में दलितों के हो रहे शोषण, दमन व उत्पीड़न की जटिल प्रक्रिया को चित्रित किया है। ग्रामीण क्षेत्र में दलितों की अस्मिता व अस्तित्व को नकारकर सवर्ण हिंदू समुदाय जातिवादी प्रवृत्तियों में लिप्त होकर कैसे दलितों को अपमानित करने की हर समय कोशिश करता रहता है इसे उजागर किया है। यह एक दलित परिवार के किए गए अपमान और उस अपमान के विरोध में खड़ी नई पीढ़ी के संघर्ष की वास्तववादी कहानी है।

यह ‘बिरमा’ के साहस और उसके आत्मसमान के संघर्ष की कहानी है। बिरमा का भूमिहीन मजदूर परिवार है। मां, बाप कठोर परिश्रम करके पेट पालते हैं। उनके साथ ही बिरमा भी हर प्रकार के कठोर परिश्रम द्वारा अपने परिवार का हाथ बटाती है। एक भाई है किसन जो शहर में कॉलेज की पढ़ाई कर रहा है। जब वह गांव लौटता है तो कभी उसके साथ उसके शहर के दोस्त भी होते हैं। उनके बीच होती बहसों को सुनकर बिरमा हैरत में पड़ जाती है, कि ये इतना क्यों लड़ते हैं? लेकिन वह नहीं समझ पाती कि किसन और उसके मित्रों में शिक्षा से नई परिवर्तनवादी सोच का विकास हुआ है। चेतना विकास के विस्तार के कारण स्वाभिमान, आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करने का किसन में आत्मविश्वास है। बिरमा की जिज्ञासाओं को सुलझाने का किसन प्रयास भी करता है, ऐसे समय बिरमा महसूस करती है कि उसे भी पढ़ने का मौका दिया जाता तो, शिक्षित होकर किसन की तरह वह भी बहस में हिस्सा ले सकती।

मंगलू, सरबती (बिरमा के माता, पिता) और बिरमा सवर्ण जमींदारों के खेतों में मजदूरी पर गए हैं, शाम को माँ-पिता के कहने पर बिरमा धान का एक गड्ढर सर पर उठाकर तेज कदम उठाती घर की ओर चल पड़ती है। तेजभान का बिगडैल लड़का सचीन्दर बिरमा का पीछा करके रास्ते में उसे अकेली घेरकर उसकी इज्जत लूटने की कोशिश करता है। अचानक हुए हमले और डर से आतंकित बिरमा गिर पड़ती है लेकिन अपने आत्मसम्मान पर होते हमले को वह सह नहीं पाती। निडरता और साहस से वह दुश्मन पर अचूक प्रहार कर के अपने को बचा लेती है। फिर से धान का गड्ढर लेकर वह किसी तरह घर पहुँचती है। रात में माँ के सामने पड़ते ही उसके मन का क्रोध आंसूओं के साथ-साथ फट पड़ता है। माँ-बाप दोनों ही इस घटना से स्तब्ध हैं, लेकिन उनमें बेटे के अपमान का बदला लेने के लिए तेजभान जैसे चरित्रहीन और सत्ता के मद में डूबे व्यक्ति से लड़ने की हिम्मत नहीं है।

जमिनों के मालिक सवर्णों द्वारा दलित समुदाय का लगातार दमन, शोषण और उत्पीड़न किया जाता रहा है। दलित समाज संगठित न होने के कारण सवर्णों की ज्यादतियों को चुपचाप

सहता रहा है। बिरमा के साथ हुई घटना को भी वे दोनों चुपचाप सहने में ही अपनी भलाई समझते हैं। वे सोचते हैं बिरमा के साथ हुई घटना की खबर जात बिरादरी में फैल जाने से बिरमा के माथे पर ही कलंक लग जाएगा। स्त्री के प्रति उन दोनों की और बिरादरी की सोच पर परंपरागत पुरुष प्रधानता का प्रभाव है। जिसके मूल्य और नीतिमत्ता में स्त्री की इज्जत लूट ली जाने पर, स्त्री को ही दोषी समझा जाता है। स्त्री की इज्जत का सवाल उसकी शारीरिक पवित्रता के साथ जोड़ दिया गया है। स्त्री के साथ जबरदस्ती होने पर भी उसकी पवित्रता के नष्ट होने को महत्व देकर, भारतीय समाज व्यवस्था स्त्री को ही कलंकित मानती है। इसी सोच के प्रभाव में मंगलू और सरबती किसन से इस बात को छुपाना चाहते हैं।

अपराधी पुरुष के प्रति समाज कोई रोष व्यक्त नहीं करता। दलित भँवरीबाई पर बलात्कार करने वाले तीन सवर्ण बलात्कारी राजस्थान हाइकोर्ट के द्वारा सुनाए फैसले के कारण निर्दोष छोड़ दिए गए। निर्णय सुनाते हुए जज ने कहा था कि सवर्ण समाज के पुरुष दलित स्त्री पर बलात्कार ही नहीं कर सकते, क्योंकि यह इनकी सोच में ही शामिल नहीं है। पुरुष प्रधानता और जातिवादी दंभभरी सोच और दलित स्त्री के प्रति हीन दृष्टिकोण का यह ज्वलत उदाहरण है। नारी मुक्ति आंदोलन द्वारा राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर भँवरीदेवी को न्याय दिलाने व सवर्ण बलात्कारियों को सजा दिलाने की मांग को जातिवाद और सत्ता प्रभुता के कारण प्ररुष प्रधान व्यवस्था ने खारिज कर दिया। स्वतंत्र व आधुनिक भारत में इस प्रकार के सोच के प्रभाव को देखकर, परिवर्तन के लिए तेज संघर्ष की आवश्यकता स्त्रीवादी आंदोलन महसूस करता है।

इसी चेतना का अंश बिरमा और किसन में दिखता है। बिरमा के किए गए आपमान की सजा सचीन्दर को मिले इस के लिए किसन जी-जान से संघर्ष करता है।

न्याय के लिए सबसे पहले वह पुलिस का सहारा लेता है। लेकिन जाति सत्ता के प्रभाव को ढोती भ्रष्ट पुलिस उसकी सहायता करने की बजाय किसन व उसके मित्रों की पुलिस इन्स्पेक्टर पीटाई करके उन्हें खदेड़ देता है। दलितों के प्रति घृणित और क्रूर दृष्टिकोण का ही पुलिस प्रदर्शन करती है। गरीबों को सुरक्षा व न्याय मिले इसलिए लोकतांत्रिक मूल्यों पर पंचायतों का गठन हुआ है। लोकतांत्रिक मूल्यों पर बनी पंचायत में बिरमा को न्याय जरूर मिलेगा, यह सोचकर किसन बिरमा की ओर से पंचायत में शिकायत दर्ज करता है। उसका कहना था “पंचायत एक लोकतांत्रिक संस्था है। गांव की समस्याओं को निपटाना पंचायत का कर्तव्य है।” पंचायत के प्रधान बिशनसिंह के पास शिकायत भेज दी जाती है। बिशनसिंह इससे घबराकर तेजभान के पास सहायता की याचना करने चला जाता है। बिशनसिंह स्वयं

दलित होकर भी तेजभान जैसे सवर्ण सत्ताधारियों के आगे दबा हुआ है। बिश्महिंद प्रधान होकर भी तेजभान जैसे के हाथ का मोहरा बना हुआ है। वह बिरमा की अर्जी लेकर तेजभान के पास पहुंच जाता है। तेजभान अर्जी देखते ही भड़क उठा था 'भंगी... चमसे की यह हिम्मत। क्यूं बे बिसना तुझे प्रधान इसीलिए बनाया था?' सरपंच के प्रति सवर्ण तेजभान का यह रवैया संपूर्ण स्थिति को खोल देता है। मंगलू को बुलाकर तेजभान उसे डराना चाहता है, परिणामतः डरा हुआ मंगलू सारा गुस्सा किसन पर उतारता है। लेकिन आत्मसम्मान के लिए छोड़े गए संघर्ष में पिछे हटना उसे मंजूर नहीं है। पंचायत फैसला सुनाने के लिए कानूनन मजबूर थी, लेकिन फैसला बिरमा को न्याय दिलाने वाला नहीं था। सचीन्दर को केवल पांच रूपए जुर्माने पर छोड़ दिया गया। बिरमा, किसन और अन्य मित्र इस फैसले से अवगत रह गए थे। लेकिन उदास होने के बावजूद बिरमा ने सबका ढाढस बंधाते हुए कहा "इस हार पर मुंह क्यों लटका रे हो। ये अंत ना है..... तुम लोगों ने मेरे विश्वास को जगमगा है... इसे मरने मत देना।"

बिरमा के अंदर जगे आत्मविश्वास व आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करने की चेतना को सभी ने देखा और सभी के अंदर उम्मीद जाग उठी थी। मंगलू और सरबती भी उनके इस संघर्ष में शामिल हो गए थे। 'यह अंत नहीं' कहानी के माध्यम से लेखक ने सवर्ण हिंदू समाज के दलितों के प्रति अन्यायपूर्ण रवैये को प्रस्तुत किया है। एक ओर दलितों के प्रति विशेषकर दलित स्त्री के प्रति भोगवादी दृष्टि रखने वाले सवर्णों की दमनकारी, निरंकुश व्यवस्था को उजागर किया गया है तो दूसरी ओर दलित समुदाय के अपने अंतर्विरोधों को चित्रित किया गया है। दलितों में अपने आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करने की चेतना का विकास भी इस कहानी के माध्यम से दृष्टिगत हुआ है। पुरुष प्रधानव्यवस्था के साथ-साथ परंपरागत पुरोहितवादी दृष्टि की भी आलोचना की है। इस सबके खिलाफ किसन व बिरमा का संघर्ष एक बड़े परिवर्तन का सूचक है। दलितों में भी आत्मसम्मान की भावना है। वे अपनी अस्मिता की लड़ाई खुद लड़ेंगे और सामान्य मानवीय जीवन जीने की इच्छा उन्हें नए परिवर्तन को स्वीच लाने का साहस पैदा करती है। दलित लेखक की रचना में क्रांति का भाव सहज रूप से अभिव्यक्त होता है। क्योंकि जिस विचारधारा के प्रभाव में दलित लेखक रचना लिख रहा है वह सामाजिक परिवर्तन के लिए अनिवार्य रूप से सामाजिक, आर्थिक क्रांति को महत्व देता है। 'यह अंत नहीं' कहानी मानवीय अधिकारों के संघर्ष और दलित समाज की चाहना की अभिव्यक्ति है।

## कहानी

गाँव की ठहरी हुई जिन्दगी में एक भूचाल-सा आ गया था। जहाँ ऊपरी सतह पर शांति और ठहराव दिखाई देता था, वहीं निचली सतह पर तेज हलचल थी। जो ऊपरी सतह को तोड़ देने के लिए छटपटा रही थी। लेकिन ऊपरी सतह इतनी सुदृढ़ थी कि उसे तोड़ पाना आसान नहीं था।

बिरमा ने इस ऊपरी सतह पर चोट की थी। यह जानते हुए भी कि उसकी चोट बेअसर होगी। दूसरों की तरह वह चुप नहीं रह पाई थी। शायद रह भी जाती, यदि उसने किसन और उसकी मित्र-मंडली के बीच होने वाली बहसों न सुनी होती। इसी जद्दो-जहद ने उसके अंतर्मन में विश्वास जगा दिया था।

तमाम अभावों के बावजूद मंगलू ने किसन को कॉलेज की पढ़ाई के लिए शहर भेजा था। महीने दो महीने में किसन और उसकी मित्र-मंडली गाँव आती थी। शहर के खुले माहौल ने किसन की सोच और मानसिकता को प्रभावित किया था। वे जब इकट्ठे होते तो किसी न किसी मुद्दे पर ऊँची आवाज में घंटों बहस करते थे। बिरमा की समझ में कुछ भी नहीं आता था। वह अक्सर किसन से पूछती थी, “तुम इतनी लड़ा क्यूँ करो?” किसन हंसकर कहता, “बुद्ध, यह लड़ाई नहीं बातचीत है।”

बिरमा हैरान रह जाती, “यह कैसी बातचीत है? गाँव में तो इसे लड़ाई ही कहते हैं।” इस बातचीत की वह अभ्यस्त हो गई थी। उनकी बातचीत के कुछ टुकड़े उसे याद रहने लगे थे। आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, स्वाभिमान, संघर्ष, संगठन, मात्र शब्द नहीं रह गए थे उसके लिए।

वह इनके अर्थ जानना चाहती थी। किसन से पूछती तो वह समझाने की कोशिश करता, लेकिन बिरमा को लगता कि वह समझ नहीं पा रही है। वह मन मसोस कर रह जाती थी। ऐसे क्षणों में उसका लगता, काश ! उसे भी बापू ने स्कूल भेजा होता। किसन की तरह वह भी कॉलेज जाती तो इतनी बड़ी-बड़ी बातें उसकी समझ में जरूर आती।

उसे लगता किसन और उसके दोस्त ज्यादा पढ़े-लिखे हैं। उनके जैसी बातें करने वाला गाँव में कोई भी नहीं है। अपनी बस्ती की तो कोई बात ही नहीं बसियों में भी ऐसा कोई नहीं है।

धान कटाई के उमस भरे दिन थे। मंगलू और सरबती के साथ बिरमा भी धान कटाई के लिए जाती थी। उस रोज वे तेजभान के खेत में धान काटने गये थे। बस्ती के पन्द्रह-बीस

स्त्री-पुरुष कटाई पर लगे थे। साँझ होने से पूर्व ही धान कटाई, छँटाई आदि का काम पूरा कर लिया गया था। धान बोरो में भरा जा रहा था।

मंगलू सरबती और बिरमा को एक-एक गट्टर धान मिला था। एक गट्टर बिरमा के सिर पर रखते हुए मंगलू ने कहा, "तू घर जा। साँझ हो रही है...घर जाके रोटी-पाणी देख लियो.. हमें आणे में देर हो जागी। बुग्गी में धान लादके ही आणा होगा। तू चल।"

बिरमा अकेली ही चल पड़ी थी। बाकी मजदूर वहीं रह गए थे। बोझ भारी था। रास्ता कच्चा एवं उबड़-खाबड़ था। संभल-संभलकर चलना पड़ रहा था। गाँव काफी दूर था। गाँव से पहले आम का बगीचा था। उसके साथ-साथ पगडंडी थी। सुनसान रास्ते पर चलते हुए बिरमा का जी घबराने लगा था। वह जल्दी-जल्दी कदम उठाकर चलने का प्रयास कर रही थी। बोझ के कारण चलने की गति धीमी थी।

बगीचे में सचीन्दर दिखायी दिया। उसे वहाँ खड़ा देखकर बिरमा सहम गई। धान की कटाई के वक्त भी लगातार उसे घूर रहा था। बिरमा ने उसकी नजरें भाँप ली थीं। उसने जल्दी-जल्दी कदम उठाने की कोशिश की, ताकि वह बगीचे की ओर से खुले रास्ते पर पहुँच जाए।

कुछ कदम चलने के बाद ही उसे लगा जैसे सचीन्दर उसके पीछे-पीछे आ रहा है। उसकी धड़कने बढ़ रही थीं। बोझ के कारण वह मुड़कर देख नहीं पा रही थी।

सचीन्दर ने तेजी से आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया। बेहयायी से बोला, "सिर पर इतना बोझ है, थक गई होगी। थोड़ा-सा सुस्ता ले...." बिरमा ने आग्नेय नेत्रों से उसे घूरा। बिरमा कुछ कहे उससे पहले ही सचीन्दर ने उसके गालों को छुआ। उसके स्पर्श से बिरमा के शरीर में जैसे बिजली-सी कौंध गई। क्षण भर को तो वह सहम गई थी। सचीन्दर ने जैसे ही उसके सीने की ओर हाथ बढ़ाए, बिरमा ने पीछे हटने की कोशिश की, सन्तुलन बिगड़ा लेकिन बिरमा ने सिर पर रखा गट्टर सचीन्दर के ऊपर गिरा दिया। अचानक इस हमले से वह गड़बड़ा गया और गिर पड़ा। जैसे ही उसने उठने की कोशिश की, बिरमा ने पूरी ताकत से उसकी जाँघों के बीच वार किया। लात का प्रहार इतना तगड़ा था कि सचीन्दर उठ नहीं पाया। किसी तरह लड़खड़ाकर खेत में घुसकर गुम हो गया। बिरमा मेंड़ पर खड़ी थी, उसे भागता देखकर चिल्लाने लगी। उसने पहले ही झटके में सचीन्दर की बेहयायी को कायरता में तब्दील कर दिया था।

कुछ देर उसी क्रोधित मुद्रा में खड़ी रही। गुस्से में उसका शरीर काँप रहा था। गड्ढर गिरने से धान बिखर गए थे। जिन्हें देखकर बिरमा का जी दुःखी हो गया। उसके अन्तर्मन से सचीन्दर के लिए बहुआएँ निकलीं।

दूर खेतों से लौटती स्त्रियों की आवाज बिरमा को सुनायी दी। वह गड्ढर पर बैठकर उनका इन्तजार करने लगी।

बिरमा को रास्ते के बीचों-बीच इस तरह बैठा देखकर उन्होंने पूछा, "अरी क्या हुआ?"

"कुछ नहीं..... यह बोझ गिर गया...करके हाथ लगवा दो...." बिरमा ने भीतर उठते शोर को छिपाकर कहा।

वह गड्ढर उठवाकर उनके पीछे चल पड़ी।

घर लौटकर भी उसका गुस्सा शांत नहीं हुआ था। किसन घर पर ही था। बिरमा का उखड़ा हुआ मूड देखकर उसने पूछा, "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं!" बिरमा ने सहजता से उत्तर दिया लेकिन उसे रह-रहकर रोना आ रहा था, वह किसन के सामने आने से बचने का प्रयास कर रही थी।

मंगलू और सरबती को आने में देर हो गई थी। माँ को देखते ही बिरमा की रुलाई फूट पड़ी, उसे इस तरह हलकान होते देखकर सरबती का हृदय काँपने लगा। वह किसी अज्ञात आशंका से डर गई थी। उसे घर के भीतर ले गई।

"क्यूँ री.....क्या हुआ.....रो क्यूँ रही है?" सरबती ने पूछा।

मंगलू धान के गड्ढरों को सुव्यवस्थित करने में लगा था। किसन उसका हाथ बँटा रहा था।

बिरमा की हिचकियाँ बँध गई थीं। सरबती के ढाढ़स देने पर उसने सारा किस्सा कह सुनाया। सरबती अवाक् रह गई थी। उसे लगा जैसे किसी काले साये ने उसके परिवार पर कुदृष्टि डाल दी है। वह गुमसुम हो गई थी। आँखों के भीगे कोर आँचल से पोंछते हुए उसने बिरमा को समझाने की कोशिश की। उसे ऊँच-नीच समझाई, बदनामी का डर दिखाकर चुप रहने की सलाह दी। माँ की एक-एक कोशिश बिरमा को कांटे की तरह बीघ रही थी। उसे हर सलाह डर और बेबसी का अक्स दिखा रही थी। उसके भीतर एक भीषण तूफान हिलोरें मारने लगा था। वह चुपचाप मां का एक-एक लफ्ज सुन रही थी। बिना कोई प्रत्युत्तर दिए उठी और चूल्हा जलाने बैठ गई।

चूल्हे की धधकती आग ने उसके अंतस् की जलन को और अधिक सुलगा दिया था वह बेबसी से निजात पाना चाहती थी। उसने अपने आँसू पोंछ लिए थे।

मौका देखकर सरबती ने मंगलू से पूरी बात कह दी। मंगलू के पाँव-तले की जमीन खिसक गई। उसने एक गहरी साँस खींची। रात के गहरे अंधेरे में अपनी पीड़ा को घोलने की चेष्टा करने लगा।

कुछ देर की खामोशी के बाद उसने सरबती से कहा, "बिरमा को ठीक से समझा देना। किसन से कोई जिक्र ना करे।"

दोनों के बीच फिर से गहरा सन्नाटा पसर गया था। दोनों अपने-अपने भीतर उमड़ते चक्रवात की ध्वनि सुन रहे थे। अंधेरे की सघनता उनके भीतर समा गई थी। मंगलू ने गहरी सोच से बाहर आते हुए कहा, "बिरमा की माँ...इब एक मिलट के लियो बी उसे अपनी आँखों से दूर ना करियो...टेम बुरा आ गया है...किसी तरियो इसके हाथ पीले होजां तो कुछ चैन मिलेगा....।" उसकी आवाज किसी अंधेरी गुफा से छन-छनकर आ रही थी।

तेजभान के खानदान के चरित्र को मंगलू अच्छी तरह जानता था। सचीन्दर की हरकतें किसी से छिपी हुई नहीं थीं। बाप-बेटे दोनों की नजर में किसी दूसरे के मान-सम्मान का कोई मतलब ही नहीं था। सचीन्दर का नाम सुनते ही मंगलू आतंकित हो गया था।

रात भर मंगलू, सरबती और बिरमा अपने-अपने ढंग से समस्या का समाधान खोजने की कोशिश कर रहे थे। बिरमा ने पूरी रात जागकर काटी थी। सुबह जब वह उठी तो उसकी आँखे सूजी हुई थीं। चेहरा उदास था। वह घर के काम में लग गई थी। मंगलू भी जल्दी उठकर जंगल-फरागत के लिए चला गया था। सरबती खाली घड़े लेकर कुएँ से पानी लेने चली गई थी। बिरमा ने उन दोनों के जाते ही किसन को जगाया।

बिरमा ने किसन को कल की पूरी घटना से अवगत करा दिया। वह रात भर जागकर अपने आपको हर एक स्थिति के लिए तैयार कर चुकी थी। उसकी आँखों में आँसू की जगह गुस्सा और नफरत भरी हुई थी।

सचीन्दर की इस हरकत पर किसन का खून खौल उठा था। जिस्म में जैसे अंगारे भर गए थे।

मंगलू के बाहर से लौटते ही वह बिफर पड़ा, मंगलू हक्का-बक्का रह गया था। बिरमा किसन के ठीक पीछे खड़ी थी। मंगलू ने पूरी जिन्दगी झुके-झुके गुजारी थी, किसन अब उसे



सीधा खड़ा होने के लिए कह रहा था। जबकि सीधा खड़ा होने की उसे आदत ही नहीं थी। मंगलू को लगा, जिसका डर था वही हुआ। जवान लड़का है। कुछ उल्टा-सीधा कर बैठे।

उसने दयनीय होकर कहा, “ना किसन....जबान खोलोगे तो बुरा हो जागा। इबी तो बात घर में है, कल पूरे गाँव-देहात में फैलेगी...बदनामी होगी। बिरमा के माथे पे दाग लग जागा.... चुप रहना ही ठीक है.....”

मंगलू की बात बीच में ही काटकर किसन बोला, “बापू ! बिरमा का दोष क्या है?.... जो उसे सजा मिलेगी। नहीं बापू....सचीन्दर को ही सजा मिलेगी.....” किसने गुस्से में बाहर निकल गया। मंगलू ने रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह नहीं रुका।

किसन शहर आ गया था। उसने अपने साथियों को इकट्ठा करके घटना की जानकारी उन्हें दी, अपने बापू और माँ के डर की बात भी उसने खुलकर बताई, “अब, आप लोग बताओ...क्या करना चाहिए।” किसन ने सवाल किया।

विचार-विमर्श के बाद सभी की राय थी कि तेजभान ताकतवर आदमी है। उसके लड़के पर हाथ डालने का मतलब है आग से खेलना। सभी की राय थी कि सचीन्दर से सीधा टकराने की बजाय पुलिस की मदद ली जाए।

वे सभी थाने में रपट लिखाने गए थे। लेकिन इंस्पेक्टर ने रपट लिखने से मना कर दिया था। इस बात पर उनके बीच काफी गर्मा-गर्मी हो गई थी।

इंसपेक्टर ने कटाक्ष करते हुए कहा था, “छेड़ा-छाड़ी हुई है....बलात्कार तो नहीं हुआ.....तुम लोग बात का बतंगड़ बना रहे हो। गाँव में राजनीति फैलाकर शांति भंग करना चाहते हो। मैं अपने इलाके में गुंडागर्दी नहीं होने दूंगा....चलते बनो।” कुछ क्षण उनके बाहर निकलने का इन्तजार किया गया। वे टम से मस नहीं हुए तो अजीब-सी मुद्रा बनाकर बोला, “फूल खिलेगा तो धीरे मण्डराएंगे ही.....” उसने बेशर्मी से खीसें निपोरीं। उसके इस तरह बोलने से किसन बौखला गया। उसने तिलमिलाकर कहा, “तमीज से पेश आइए।”

इंसपेक्टर का झन्नाटेदार थप्पड़ किसन के गाल पर पड़ा, “हरामी की औलाद ये डंडा पूरा उतार दूंगा....तू मुझे तमीज सिखाएगा.....” इंसपेक्टर ने बिना देर किए सभी की घुनाई शुरु कर दी। अचानक हमले से वे हड़बड़ाकर इधर-उधर भागने लगे।

पिट-पिटकर वे थाने से बाहर आ गए थे। पुलिस के साथ उनकी यह पहली मुठभेड़ थी। कानून की किताबें रटने वाले भी बेबस हो गए थे। प्रवीण कानून के दूसरे वर्ष में था। उसके

ही सुझाव पर वे थाने गए थे रपट लिखाने। लेकिन पहले ही झटके में चारों खाने चित्त पड़े थे। प्रवीण गहरी असमंजस की स्थिति में था। किसन स्वयं को दोषी मान रहा था। उसे लग रहा था, सब उसी के कारण हुआ। निराशा की हालत में वे सब साँझ से पहले ही गाँव आ गए थे।

गाँव पहुँचकर उनका गहन विचार-विमर्श हुआ। जिसमें यह तय किया गया कि बस्ती के लोगों को इस घटना की जानकारी देकर एकजुट किया जाए। ताकि गाँव में एक दबाव बन सके। सचीन्दर ऐसे हरकत करने से पहले कोई दस बार सोचे।

साँझ होते-होते बस्ती के तमाम बुजुर्गों और नौजवानों को एक जगह बुला लिया गया था। बस्ती के बीचों-बीच नीम का पेड़ और एक चबूतरा था। वहीं सब जमा हुए थे। किसन ने खड़े होकर सचीन्दर की हरकतों के बारे में बताया। जैसे ही सचीन्दर और तेजभान का जिक्र आया, सभी में सन्नाटा फैल गया था। सभी चुप्पी साधकर बैठ गए। किसन के बहुत उकसाने पर बूढ़ा धरमू सुस्त थकी आवाज में बोला, 'ये कोई नई बात ना है। गरीब की इज्जत का कोई मतलब ही ना होवे है। ये सब तो होता ही रह। चुप रहणे में ही भला है। पाणी में रहके मगरमच्छ से बैर लेणा ठीक ना है।'

उससे सभी सहमत दिख रहे थे, लोगों में खुसर-पुसर शुरू हो गई थी। धरमू ने गला खंखारकर बात आगे बढ़ाई, 'जिनगी बीत गी है, इसी गाँव में। कदी ना सुणा किसी बिरबाणी, बहू-बेटी ने घर आके जिक्र भी किया हो। औरत की लाज चुप रहणे में है ढिंढोरा पीटणे में ना है।' धरमू ने जोर देकर कहा।

धरमू की हाँ में हाँ मिलाने हुए रामजीदास भी बोलने लगा, 'ये शरीफ बहू-बेट्टियों के लच्छन ना हैं, मर्द के सिर फुटौब्वल कराके ही चैन मिलेगा।'

किसन हैरानी से उन्हें देख रहा था। प्रवीण ने कुछ बोलने की कोशिश की तो वे सभी एक-एक कर खिसकने लगे। किसन का रहा-सहा हौसला भी टूटने लगा। उसने उन्हें रोकने की कोशिश की लेकिन धीरे-धीरे सभी उठकर चले गए। एकजुट होकर संघर्ष करने की बात तो दूर, वे बात ही सुनने को तैयार नहीं थे।

तेजभान के डर ने उन्हें इतना भयभीत कर रखा था कि वे कुछ देर रुककर बात सुनने की स्थिति में भी नहीं थे। किसन की मित्र-मंडली के लिए यह स्थिति एकदम नई थी। कॉलेज की राजनीति में उनका दखल था। लेकिन गाँव में कोई भी उनकी बात सुनने को तैयार नहीं था।

वे चुपचाप एक-दूसरे का मुँह देख रहे थे। उनके मन में कई तरह के सवाल उठने लगे थे। उनकी लम्बी-लम्बी बहसें खोखली साबित हुई थीं। सभी सोच रहे थे 'अब क्या करें'।

काफी सोच-विचार के बाद प्रवीण ने सलाह दी, "बिरमा की ओर से पंचायत में शिकायत की जाए।" प्रवीण पंचायती राज का पक्षधर था। वह हमेशा लोकतांत्रिक मूल्यों की बात करता था। उसका कहना था, "पंचायत एक लोकतान्त्रिक संस्था है। गाँव की समस्याओं को निपटाना पंचायत का कर्तव्य है।" सभी उसकी बात से ध्यान से सुन रहे थे।

"पिछले चुनाव में इस पंचायत को आरक्षित किया गया था। बिसन सिंह तुम्हारी बिरादरी का प्रधान है। वह जरूर इस मामले को गम्भीरता से लेगा।" प्रवीण ने कहा। प्रवीण की राय से सभी सहमत थे। लेकिन किसन की राय भिन्न थी। उसका कहना था, "बिसन तो एक मोहरा है। वह क्या निर्णय देगा। लेकिन आप लोगों की यही राय है तो ठीक है।"

एक अर्जी तैयार की गई। बिरमा से उस पर अंगूठा लगवाया गया। अर्जी लेकर किसन ही प्रधान के पास गया था। प्रधान ने अर्जी लेने में आनाकानी की। बार-बार यही कहा, "किसलिए अर्जी दे रहे हो?" किसन ने सिर्फ इतना ही कहा, "अर्जी में सब कुछ लिख दिया है।" अर्जी उसके हाथ में थमाकर किसन लौट आया।

अर्जी देखते ही जैसे भूचाल आ गया था। बिसन सिंह प्रधान पसीने-पसीने हो गया था। तेजभान के खिलाफ कोई भी कदम उठाने लायक ताकत उसमें नहीं थी। वैसे ही प्रधानी उसे अभी-अभी मिली थी। बिसन के दिमाग में यह बैठा हुआ था कि उसे प्रधान तेजभान ने ही बनाया है। वरना वह था क्या? उसे डर था कोई बवेला ना हो जाए। बिरमा से ज्यादा उसे अपने लिए खतरा दिखाई दे रहा था। इसीलिए अर्जी देखकर वह बुरी तरह डर गया था। बिना देर किए वह अर्जी लेकर तेजभान की चौपाल पर पहुँचा। जाते ही अर्जी उनके सामने रख दी।

अर्जी देखते ही तेजभान भड़क उठा, "भंगी....चमारों की यह हिम्मत।....क्यूं बे बिसना तुझे प्रधान इसीलिए बनाया था?"

"चौधरी साहब ! मैं इसीलिए तो खुद चलके आया हूँ। जब से मंगलू ने किसन को कॉलेज पढ़ने भेजा है बस्ती में राजनीति होने लगी है। और चौधरी साहब जमाना भी तो बदल गया है।" बिसन ने दयनीयता से हाथ जोड़कर कहा।

"ओए ! बिसना....जमाना अभी भी पहले ही वाला है, तू मुझे सीख दे रहा है। अपनी औकात मत भूल, जमाना तो तब बदलेगा, जब हम चाहेंगे, जा जाके अपनी प्रधानी संभाल। कहीं वो

ही खतरे में ना पड़ जावे। होगा वो ही जो हम चाहेंगे। और इतना उन सभी कू बता देणा, दरोगा से लेकर एस.पी. तक सभी अपनी जात के हैं। एक-एक कू अंदर करा दूंगा। ज्यादा तीन-पाँच करेंगे तो एनकाउंटर में मारे जागे बिना मौत.....” तेजभान ने प्रधान की कमजोर नस पर प्रहार किया कि वह खिसिया कर रह गया। हाथ जोड़कर विनीत स्वर में बोला, “जैसी आपकी मर्जी, मैं तो आपके पक्ष की ही बात कर रिया था।”

“ठीक है। जो करना होगा, हम बता देंगे। मामले को ज्यादा तूल देने की ज्यादा जरूरत ना है। जाके इन्हें समझा। क्यूँ बेमौत मरना चाहते हैं। और हाँ, उन शहरी लफंगों से कह देणा, गाँव में राजनीति ना फैलावें। अंजाम बुरा होगा। सुणा है उन्होंने कोई मीटिंग भी करी थी?” तेजभान ने बिसना की ओर इस तरह देखा जैसे कह रहे हैं—हमें सब पता है।

बिसना लौट आया। लेकिन घबराया हुआ। तेजभान कभी भी कुछ भी कर सकता है। प्रधान होकर भी उसकी औकात एक मुलाजिम से कम नहीं थी। अपनी ही बस्ती में वह एक बाहरी व्यक्ति जैसे रहता था।

तेजभान ने सचीन्दर को भी डाँटा, “अबे ! कुछ करना ही था तो हरामजादी को खेत में ही घसीट लेता....खुद ही किसी को मुँह दिखाणे जोगी ना रहती।”

सचीन्दर मुँह नीचा किए सड़ा रहा। खेत में घसीटने की जो कल्पना उल्टे बिरमा से पिटकर ही आया। लेकिन इस बात को उसने छिपा लिया था।

गाँव भर में यह खबर आग की तरह फैल गई थी। तेजभान को जितना खतरा नहीं था जितना अपने ही कुटुम्बदार चौधरी जगबीर सिंह से था—आगे जगबीर सिंह ने हवा दे दी इस मामले को तो गाँव की रीत ही बदल जाएगी।

उसने मंगलू को चौपाल पर बुलवा भेजा था। “मंगलू तू मुझे अच्छी तरह पिछाणे है। फिर भी ऐसी हरकत की। क्या समझता है—पँचायत हमें फांसी पर चला देगी। पँचायत है क्या? हमारे पांव की जूती। प्रधान कोई भी रहे नकेल हमारे हाथ में होती है। जा जाके अपनी बेट्टी कू समझा। कुछ ऐसा-वैसा हो गया तो मुझे दोस मत देणा, आगे लेरी मर्जी।” तेजभान की आँखों से आग बरस रही थी।

मंगलू चूपचाप लौट आया। अर्जी के बारे में उसे कोई खबर ही नहीं थी। उसने घर आते ही किसन पर अपना गुस्सा उतारा। तड़तड़ डंडे से पीटना शुरू किया।

“तू, मुझे कहीं का ना छोड़ेगा....पूरे गाँव-देहात में बिरमा की बदनामी कर दी है तूने।”

किसन को देखकर बिरमा दौड़ी। उसने बापू के हाथ से डंडा छीनकर दूर फेंक दिया। आवाज में तीखापन भरकर बोली, “वाह बापू, जो भाई अपनी बहन की आबरू की खातिर लड़ रहा है, तुम उसे पीट रहे हो.... और जो.....” अचानक उसके भीतर जमा सैलाब फूट पड़ा। उसका गला रंध गया। शब्द गले में ही अटक गए थे। सिर्फ हलाई फुटी पड़ रही थी। आवाज सुनकर माँ भी आ गई थी। वह भी रोने लगी।

बिरमा को रोता देखकर मंगलू भी रोने लगा। उसने फफकते हुए कहा, “तू ही बता बेटी मैं क्या कहूँ.....वे सब जालिम लोग हैं.....”

“कुछ मत करो बापू! जुल्म के आगे झुक जाने पर भी क्या होगा.....” बिरमा ने मंगलू को ढाढ़स दिया।

किसन चुपचाप एक ओर खड़ा था। उन्हें देखकर वह अपनी पीड़ा भूल गया था। उनके करीब आकर बोला, “बापू! हमारे पास न ताकित है, न रतबा.....लेकिन अपनी जान देकर आत्मसम्मान तो माँग ही सकते हैं.....”

बिरमा को लगा जैसे वह अचानक बड़ी हो गई है। वह सिर्फ अपने लिए ही नहीं सबके लिए लड़ सकती है।

किसन ने मंगलू से कहा, “बापू! पंचायत से इन्साफ और सुरक्षा माँगी है....कोई गुनाह तो नहीं किया।”

जैसे-जैसे किसन और बिरमा का स्वाभिमान जाग रहा था अपनी ही बस्ती में अलग-थलग पड़ रहे थे। आखिर पंचायत के फैसले का दिन आ ही गया था। कार्यवाही ज्यादा लम्बी नहीं थी। न किसी का बयान लिया गया था, न किसी किस्म की कोई चर्चा ही हुई थी। न बहस। न आरोपी को बुलाया गया न फरियादी को। बस, सिर्फ फैसला था। ‘सचीन्दर वल्द तेजभान ने बिरमा वल्द मंगलू के साथ राह चलते छेड़खानी करने की कोशिश की। भविष्य में ऐसी घटना न हो, इसलिए पंचायत सचीन्दर पर पाँच रुपया जुर्माना करती है।’

इस फैसले से किसन और मंगलू अवाक् रह गए थे। किसन ने विरोध किया। लेकिन उसे बोलने से रोका गया। पंचों का फैसला परमेश्वर का फैसला कहकर बात खत्म करने की कोशिश की गई।

किसन लगातार बोलने की कोशिश करता रहा। लेकिन कुछ लोगों ने उसे धकिया कर बाहर निकाल दिया। तेजभान के लोग उठकर खड़े हो गए थे। लाठियाँ फिर से लम्बी होने लगी थीं।

किसन हताश होकर लौटा था। पीछे-पीछे मंगलू भी आ गया था। बिरमा ने उनके उतरे चेहरे देखे तो सब कुछ समझ गई। घर में मातम-सा छा गया था।

शाम तक किसन की मित्र-मंडली भी आ गई थी। पंचायत का फैसला सुनकर उनके चेहरे भी उतर गए थे।

किसन ने उदास आँखों से प्रवीण की ओर देखा-कहो कैसा है पंचायती राज- आँखों में सवाल था। प्रवीण जैसे अपने ही भीतर कुछ खंगाल रहा था। उन्हें चुप देखकर बिरमा बोली, "किसन भैया ठीक कहवे थे पंचायत में नियाय ना होता, जात-बिरादरी देखी जावे है। गुंडागर्दी होती है पंचायत के नाम पे।..." बिरमा को इस तरह बोलते हुए वे पहली बार देख रहे थे। बिरमा की मुखरता से चेहरे पर एक अजीब-सी चमक आ गई थी। जिसकी ओर सभी का ध्यान गया था।

प्रवीण जो अभी तक चुप ही था। उसने बिरमा से कहा, "हाँ, तुम ठीक कह रही हो, किसन ने पहले ही कहा था। बिसन सिंह एक प्रधान होते हुए भी सिर्फ मोहरा है।" बिरमा ने उस सभी को संबोधित करते हुए कहा, "इस हार पर मुँह क्यों लटका रे हो। ये अंत ना है..... तुम लोगों ने मेरे विश्वास कू जगाया है.....इसे मारने मत देणा।" उसके भीतर जैसे कुछ उबल रहा था, जो बाहर आना चाहता था।

सभी ने मिलकर कहा था, "ना बिरमा.....यह अंत नहीं है....तुमने हमें ताकत दी है। हार को जीत में बदलेंगे, लोगों में विश्वास जगाकर, ताकि फिर कोई बिसन मोहरा ना बने।"

सभी के चेहरों पर उम्मीद दिखाई दे रही थी। मंगलू और सरबती भी उनके साथ आकर मिल गए थे, एक नई उम्मीद के साथ।